नवधा भक्ति

आहार के लिये निकलने से पहले मंदिर से साधु जो संकल्प लेते हैं कि आज एक घर आदि तक जाऊँगा, एक ही मुहल्ले में जाऊँगा, एक कलश, एक श्रीफल, एक पुरूष, एक बालक आदि एस रंग के वस्त्र पहने होता ही आहार ग्रहण करूँगा, अथवा चौके के अंदर थाली में ये वस्तु दिखेगी तो आहार करूंगा| यह वृत्ति परिसंस्थान तप कहलाता है| इसी को विधी लेना कहते हैं| इसके करोडों भंग बन सकते हैं |लकिन यह तप साधु को अनावश्यक नहीं कि साधु विधि लें, लेकिन साधु गरीब, अमीर आदि के भेद भाव से बचने के लिये यह तप करते हैं|

नवधा भक्ति ः

1 . पडगाहन

2 . उच्चासन

3 . पाद प्रक्षालन

4 . पुजन

5 . नमन

6 . मनशुध्दि

7 . वचन शुध्दि

8 . कायशुध्दि

9 . आहार एंव जलशुध्दि

1 . पडगाहनः

हे स्वामिन| नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु

अत्र . . . अत्र . . . . तिष्ठ . . . तिष्ठ (मुनिराज के रूकने पर तीन परिक्रमा लगायें)

[**पडगाहन कहॉ से करें ः** पडगाहन अपने चौक के सामने करें |यह उत्कृष्ठ विधि है यदि घर दूर है तो अपने घर के नजदीक चौराहे पर खडे रहें जहॉ सभी लोग खडे रहते हो या जहॉ मुनिराज आसानी से देख सकें वहॉ खडे हों लेकिन पडगाहन के बाद किसी दूसरे चौके वाले सामने से निकलना अच्छा नही माना जाता है अन्य चौके वालो के परिणाम कलुषित हो जाते है इसमें स्थितियॉ और परिस्थितीयॉ भी देखी जाती है|]

विधी मिलने पर ः हे स्वामी . . . . . (गृह प्रवेश पर)

3 . पाद प्रक्षालनः

मुनिराज के चरण एक थाली मे रखवाकर एक कलश मे गुनगुना जल लेकर धोाये, चरण धोने के पश्चात सभी लोग गंधोदक माथे पर लगााये गंन्धोदन्क लगाने के बाद प्रासुक जल से सभी दाता अपने अपने हाथ धोये|

(नोटः यदी साधु का नाम मालूम है तो नाम लेकर पुजन करे नही ते बिना नाम के भी पुजन कर सकते है यदी साधु का स्वास्थ खराब है या समय नही है तो उदक चंदन आदी बोलकर अर्ध भी चढा सकते है|)

4 . पुजन विधीः

पुज्य श्री जी के चरणो में हम, झुका रहे अपना माथा,
जिनके जीवन की हर चर्या, बन पडी स्वयं ही नव गाथा|
जैनागम का वह सुधा कलश, जो बिखराते है गली गली|
जिनके दर्शन को पाकर के, खिलती मुरझाई हृदय कली|

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवोषट आह्वानम्|

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम्|

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्|

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा|

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीही स्वाहा|

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्राय अक्षय पदा प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा|

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्राय काम वाण विध्वं सनाय पुष्पम निर्वपामीतिही स्वाहा|

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीतिही स्वाहा|

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दिपंनिव पामीतिही स्वाहा|

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धुप निर्वपामीतिही स्वाहा|

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीतिही स्वाहा|

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरू-सुदीप-सुधूप-फलार्ध्यकेः
धवल मंगल गान रवाकुले मम् गृहे मुनिराज महाम यजे ||

हीं . श्री . . . . . सागर जी मुनीन्द्रायअनर्ध पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीतिही स्वाहा .

5 . नमनः

सभी हाथ जोडकर नमन करें, हे स्वामी नमोस्तु, नमन के पश्चात् सभी दाता हाथ धोकर भोजन की थाली जिसमे आहार सामग्री हो साधु को दिखाये, मुनिराज आहार सामग्री मे से जो भी निकालने का इशारा करे उसे निकालकर अलग कर दें, मुनिराज के आहार मे न दें |

6/7/8/9 . शुध्दि

भोजन की थाली दिखाने के पश्चात , सभी चौके मे उपस्थित दाता शुध्दि बोलें-मन शुध्दि,वचन शुध्दि, काय शुध्दि,आहार जल शुध्दि है, हे स्वामी मुद्रिका छोड अंजुली बांध आहार ग्रहण करे |

शुध्दि के पश्चात्

एक जग मे प्रासुक जल लेकर मनिराज के हाथ बैठकर धुलवाएं| हाथ धोकर मुनिराज सिध्द भक्ति पढकर अंजुली बांधकर खडे हों तब दाता अंजुली मे जल दें फिर ग्रास, दुध आदि से आहार| भक्ति श्रध्दापुर्वक सम्पन्न करायें |